सूर्योदय होगा निश्चित, और जल्द ही

इतिहास बताता है कि हर जिन्दा कौम के बहादुर बेटे-बेटियों ने अपनी आजादी और सामाजिक न्याय के एक आदर्श के लिए निरंतर संघर्ष किया है और अकूत कुर्बानियां दी हैं। अतीत में ऐसे कई महान संघर्ष हुए हैं जिनसे पैदा हुई ऊष्मा ने देशों की सीमा लांघते हुए दुनिया के हर कोने के युवा हृदयों को उद्वेलित किया। 1917 की रूसी क्रान्ति को ही लें जिसने सिर्फ रूस ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता को नये युग में प्रविष्ट करा दिया। स्वयं हमारे देश की आजादी के आन्दोलन पर इसका गहरा असर पड़ा और नये संवेग के साथ मजदूरों-किसानों के साथ छात्रों युवाओं ने अपने को संघर्षों में झोंक दिया। यहां पर हम उसी रूसी क्रान्ति की एक सिपाही का एक पत्र दे रहे हैं, उसके एक संक्षिप्त परिचय के साथ।

- सम्पादक

सूर्योदय होगा निश्चित, और जल्द ही
खिल उठेंगी कलियां
सूर्य का आलोक फैलेगा धरा पर
सदियों के आखिरी निशानात भी
मिटा दिये जायेंगे
जैसे बुहार दिया गया हो,
स्वयं जिन्दगी द्वारा।

मेरी सबसे प्यारी अनैद☆,

मैं अमूमन अवसाद के क्षणों में तुम्हें पत्र लिखने बैठ जाती हूं, और इस वक्त भी यही सच है। हालांकि मेरे पास इसके निराकरण का उत्तम साधन है, एक उपचार है जो मुझे शान्त करता है, और वह है मेरा काम। मैं ढेर सारा काम कर रही हूं। मेरा मतलब है प्रचार के क्षेत्र में। कच्चे माल को गढ़ने का मेरा हुनर जब एक सचेत मजदूर को तैयार करने में रंग ले आता है, जब मैं उसकी वर्ग-चेतना को जगा देती हूं... तब मैं सन्तुष्ट महसूस करती हूं, तब मेरी ताकत दो गुनी हो जाती है, तब मैं सप्राण होती हूं। मैं अवसाद महसूस नहीं करती, और अधिक आत्मदृढ़ता से काम में जुट जाती हूं। यह ज्ञान मुझे मदद करता है ढेर सारा अध्ययन करने में, व्यवस्थित ढंग से जीने में (नहीं तो कोई काम ही नहीं हो सकता), अपने साथी विद्यार्थियों की बेफिक्र महफिल का सुख छोड़कर अध्ययन करने में, और अध्ययन करने में। कितनी खुश हूं मैं कि मेरा काम तब भी उपयोगी था जब हम अभी भूमिगत ही थे और आज तो मैं कुछ हद तक अनुभवी हो चुकी हूं, और यह भी कि मैं काम कर सकती हूं! इन दिनों उन सभी के विरुद्ध जो हम बोल्शेविकों के साथ नहीं हैं, एक भीषण संघर्ष मौजूद है... अब मैं तुरत-फुरत एक सूची तैयार कर, दो कारखानों के पुस्तकालयों के लिए किताबें खरीदने जा रही हूं। फिर मैं घर चली जाऊंगी और वहां जाकर सामाजिक-जनवादी (रूस के तत्कालीन क्रान्तिकारी -अनु.) महिलाओं के एक ग्रुप का 'क्लास' आयोजित करूंगी... अनैद, तुम सोच भी नहीं सकती कि कैसी ऊर्जा और कैसी प्रतिभा मजदूरों के बीच मौजूद है। तुम शायद सोचती होगी कि मैं भी उन्हीं लड़कियों की तरह हूं जो 'ऊंची सोसायटी' की औरतों की 'विद्वत मण्डली' में शामिल होती हैं, कि मैं भी आजादी और "बेचारे मजदूरों" की बात करते हुए आंखों में आंसू भर लाती हूं और यह कि मेरा उनके प्रति एक भावुकतावादी झुकाव है। नहीं, इससे एकदम अलग बात है। मैं उन मजदूरों को इस काम से पहले ही जान गई थी और अब तो अच्छी तरह जानने लगी हूं। उन मजदूरों के पास एक वर्ग की महत्ता है, भविष्य जिसका है, जो अभी आगे कदम बढ़ा ही रहा है और जिसकी शक्ति अभी जाग ही रही है।

... मेरे बारे में चिन्ता मत करना। मैं खुश हूं और भली-चंगी हूं। मेरा ख्याल है कि मैं थोड़ा बदल गयी हूं। कोई बात नहीं, मुझे अभी अपने आपको और ज्यादा बदलना ही होगा। मुझे अभी एकदम घर छोड़ देना है, और यहां बाहर तो बिल्कुल जमा देने वाली ठंड है। खिड़की के शीशे पर ओलों की तड़तड़ाहट हो रही है। एक शोकाकुल, उन्मत्त किन्तु जीवन्त गीत की तरह यह आवाज है। धूसर आकाश आफत का मारा और एकाकी है। लेकिन सूर्योदय जल्द ही होगा, कलियां खिल उठेंगी, सदियों के आखिरी निशानात भी मिटा दिये जायेंगे, जैसे बुहार दिया गाय हो, स्वयं जिन्दगी द्वारा।

ढेर सारा प्यार,
ल्यूसिक

पुनश्च: अनैद, कभी मत भूलना कि मैं भरपूर जीवन जी रही हूं।

☆ल्यूसिक की बहन

ल्यूसिक लिसिनोवा एक रूसी विद्यार्थी थी। लेकिन वह किताबी कीड़े की तरह नहीं, बल्कि एक सार्थक और भरपूर जीवन जीना चाहती थी। वह सोचती थी कि इंसानियत की बेशकीमती उपलब्धियों, ज्ञान-विज्ञान की खोजों को मेहनतकश जनता के जीवन को बेहतर बनाने में काम आना चाहिए। वह सोचती थी कि मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण खत्म हो। वह आजादी और न्याय की बात सोचती थी। उसने जाना कि उसके देश के बहादुर युवा भी उसकी तरह सोचते हैं और उसने हमसफरों को तलाशा और अपने को एक महान और ऊंचे लक्ष्य के प्रति समर्पित कर दिया।

19 वर्षीया ल्यूसिक को बोल्शेविक पार्टी ने मजदूरों के बीच पार्टी कार्य करने मास्को भेज दिया। यह क्रान्ति वर्ष 1917 था। ल्यूसिक ने 'श्रमजीवी युवाओं के संघ' के एक संगठनकर्ता के तौर पर काम किया। क्रान्ति से पूर्व के तूफानी महीनों में दुबली-पतली ल्यूसिक ने जिस साहस के साथ पार्टी कार्यों को अंजाम दिया, सह अद्भुत था। अक्टूबर माह के निर्णायक संघर्ष में वह तूफानी पितरेल पक्षी की तरह कूद पड़ी। उसने बैरिकेडिंग में हाथ बंटाया, घायलों की देखभाल की और आगे बढ़कर लाल सेना की टुकड़ियों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान किया। गोलियों की बौछारों के बीच वह मौत को धता बताती हुई हेडक्वार्टर के आदेशों को लाल सेना की टुकड़ियों तक पहुंचाती रही। लेकिन एक दिन वह दुश्मन के सफेद गार्डों की मशीनगन के निशाने पर आ ही गयी। जिस दिन वह मारी गयी, उसके ठीक अगले दिन बोल्शेविकों ने मास्को पर कब्जा कर लिया और निरंकुश जारशाही के खात्मे की घोषणा की। क्रान्ति की इस सिपाही ल्यूसिक लिसिनोवा को लाल चौक की क्रेमलिन वाल में दफनाया गया। ●